© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2024

कैलाशचन्द्र शर्मा के साहित्य, संगीत एवं रंगयात्रा में लोकजीवन एवं लोक समस्या

शोधार्थी : प्रोमिला

सारांष

कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में लोकजीवन एवं लोकतत्त्वों को समाहित किया है जिसे जन–जन तक पहुँचाने के उद्येष्य से उन्होंने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रेनू रानी शर्मा जी के सहयोग से जब त्रिवेणी कला संगम,जयपुर की स्थापना की तो उसमें उन्हें उनके जीवन का यह परिवेश और रेनू जी को केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा में हिन्दी एवं भाषा विज्ञान के प्रोफेसर के रूप में कार्यरत अपने पिता ईश्वर सिंह जी से साहित्य के रूप में मिले इस प्रकार के संस्कार ही प्रमुख आधार बने जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 1995 की गणेश चतुर्थी के दिन अनौपचारिक रूप से त्रिवेणी कला संगम,जयपुर की स्थापना हुई।

संस्था की गतिविधियों में कैलाषचन्द्र शर्मा जी द्वारा सृजित साहित्य, संगीत एवं नाटकों को पर्याप्त मात्रा में समावेष करके नई प्रतिभाओं को आगे बढने का अवसर प्रदान किया गया है। विभिन्न व्यक्तियों एवं स्वैच्छिक तथा सरकारी संस्थाओं का सक्रिय योगदान रहा है जिनमें परम्परा नाट्य समिति, वीणापाणि कला मन्दिर, जयपुर, गंगानगर कलामंच, श्रीगंगानगर, शास्त्री कला मण्डल जोधपुर, अर्चना नृत्यालय मुम्बई एवं न्यूजर्सी अमेरिका, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल मुम्बई, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़, रवीन्द्र मंच समिति जयपुर, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी जोधपुर आदि का सक्रिय योगदान रहा है जिसका विवेचन–विश्लेषण इस शोध पत्र में प्रस्तुत किया जाएगा।

प्रारम्भ में संस्था की गतिविधियाँ, संगीत, नृत्य एवं नाटकों तक ही सीमित थी परन्तु जब संस्था द्वारा अपने प्रशिक्षण हेतु अच्छे बाल–नाटकों की कमी महसूस की गई तो कैलाश जी ने स्वयं बच्चों के लिये नाटक लिखना प्रारम्भ किया और तब उन्होंने संस्था के शिविरों में अपने ही लिखे नाटक तुक्के का बादशाह, छोटा बेगारी, पेड़ हमारे मित्र, मेरी लाडो पढ़ेगी, लड़ी मैड़ की, मोती मैड़ के, आज का गुरुकुल, वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान तथा अपनी कविता विशाल भारत, बंधन आदि के प्रस्तुतीकरण द्वारा लोक–साहित्य एवं लोक–कला के उस स्वरूप को पुनःजागृत करने का प्रयास किया जो वर्तमान समय की आँधी की धूलभरी परत के नीचे दबकर बाहर आने को तड़पता रहा।

आज त्रिवेणी कला संगम,जयपुर का कार्यफलक इतना विस्तृत हो गया है कि संस्था के समक्ष देश–विदेश की कोई सीमा न रही और कैलाश जी ने 14 अप्रैल 2018 को दुबई में संस्था की ओर से एक अल्पकालिक शिविर का आयोजन करके विदेषों के विद्यार्थियों को अपने ढूंढाड़ी गीतों का प्रशिक्षण देकर अपने एक प्रदर्शनात्मक व्याख्यान में उन्हें प्रस्तुति का अवसर देते हुए दुबई के निवासियों को भारत के ग्राम्यजीवन, एवं लोक–जीवन से साक्षात्कार कराया। संस्था का यह कार्य निश्चय ही सराहनीय एवं एक साहसिक प्रयास है क्योंकि यह विद्यार्थियों, साहित्य के अध्येताओं और कला जगत् से जुडे हर व्यक्ति के लिए उपयोगी रहेगा।

मुख्य षब्द

साहित्य, संगीत एवं नाट्य विमर्ष, त्रिवेणी कला संगम,जयपुर , प्रदर्शनात्मक व्याख्यान , रंगयात्रा, तुक्के का बादषाह रवीन्द्र मंच जयपुर, लोकतत्व, लोक समस्या

———————————————————————————————

कैलाषचन्द्र शर्मा की साहित्य, संगीत एवं रंगयात्रा में लोकजीवन एवं लोक समस्या

यह सही है कि साहित्य युगीन परिस्थितियों से प्रेरणा ग्रहण करता है, लेकिन वह केवल दृष्टा की भूमिका में नहीं होता अपितु वह नवीन चिंतन तथा प्रेरणाओं का जनक भी होता है। अतः यह कहना कि साहित्य समाज का दर्पण है, उसकी अर्द्ध व्याख्या है। दर्पण भी है लेकिन अवतल या उत्तल दर्पण नहीं है जिसमें वास्तविक छवि से प्रतिच्छवि परिवर्तित होती है। यदि हम साहित्य को समाज का दर्पण भी मानें तो वह केवल समतल दर्पण ही हो सकता है। साहित्य सात्त्विक संवेदनाओं का एक ऐसा अभिलेख है जो उद्देश्यपूर्ण होता है।

" साहित्य को कभी कालातीत नहीं कहा जा सकता न ही उसको यह माना जा सकता कि वह केवल साहित्यकार की कल्पनाओं की भाव प्रस्तुति है। साहित्य पुरातत्व अभिलेखों की भांति इतिहास संरचना में सहायक होता है। यदि हम भारत की उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में सामाजिक परिवेश, उसके आग्रह, जीवन दृष्टि और व्यवस्था की नीतियों का अध्ययन करना चाहेंगे तो मुंशी प्रेमचन्द की कहानियाँ तथा उपन्यास हमारे सम्मुख उस कालखंड का एक दृश्य प्रस्तुत कर देंगे जो इतिहास लेखन में सहायक हो सकता है। इससे यह माना जाए कि साहित्य प्रमाणित इतिहास लेखन की प्रेरणा बन सकता है। जो साहित्य युगीन परिस्थितियों के अध्ययन में सहायक है, वह कभी कालातीत नहीं होता उसका महत्त्व निरंतर–चिरंतर बना रहता है। कोई भी साहित्य या साहित्यकार कभी पुराना नहीं हो सकता, वह सदा आधुनिक तथा जीवित रहता है।'' 1

किसी भी देश के विकास में साहित्य एवं कला का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह साझा दृष्टिकोण, मूल्य, प्रथा एवं एक निश्चित लक्ष्य को दिखाता है। सभी आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य गतिविधियों में संस्कृति एवं रचनात्मकता का समावेश होता है।

विविधताओं का देश भारत अपनी विभिन्न संस्कृतियों के लिए जाना जाता है। हमारे यहाँ साहित्य, गीत–संगीत, नृत्य, नाटक–कला, लोक परंपराओं, कला–प्रदर्शन, धार्मिक–संस्कारों एवं अनुष्ठानों, चित्रकारी एवं लेखन के क्षेत्रों में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है जो मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में जाना जाता है। इनके संरक्षण हेतु संस्कृति मंत्रालय ने विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं को कार्यान्वित किया है जिसका उद्देश्य कला–प्रदर्शन, दर्शन एवं साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों, समूहों एवं सांस्कृतिक संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस खंड में भारत की सांस्कृतिक विरासत, प्राचीन स्मारकों, साहित्य, दर्शन, विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों, कला–प्रदर्शनों, मेले, त्यौंहारों एवं हस्तकला के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की जा रही है।

भारत प्रारंभ से ही साहित्य, कला एवं संस्कृति की दृष्टि से बहुत ही समृद्ध राष्ट्र रहा हैं। भारतीय कला एवं संस्कृति की विकास यात्रा हजारों वर्षों की विरासत संजोए आज भी अनवरत जारी है। प्राचीन समय में हमारे यहाँ कला, संस्कृ ति एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के दस्तावेजीकरण का कार्य प्राच्य, पाली, संस्कृत आदि भाषाओं में हुआ था। इस परंपरा को हिंदी ने काफी आगे बढ़ाया। किसी भी देश की कला एवं संस्कृति का वहाँ की भाषा से गहरा रिश्ता होता है। हिंदी ने अपने विकास क्रम में भारतीय कला एवं संस्कृति के विकास और प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। वर्तमान समय में भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही है। यह भारत की राजकीय भाषा है एवं विश्व के अनेक देशों में हिंदी का प्रभाव बढ़ा है। विश्व के 116 विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई सुलभ है। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने हिंदी को अधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकारा हैं। यह इस बात का भी प्रमाण है कि हिंदी के वैश्विक भाषा बनने के सुनहरे द्वार खुले हैं। हिंदी को वैश्विक भाषा बनने से कोई नहीं रोक सकता है।

भारत देष ने इस दिशा में बहुत विराट पहलकदमी विश्व रंग अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव के रूप में प्रारंभ की हैं। भारत की सांस्कृतिक राजधानी भोपाल में विश्व रंग टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 2019 का प्रथम अद्भुत आयोजन किया था, जिसका पूरे विश्व ने अभिनंदन किया था, वह भारतीय कला, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा एवं सामाजिक सरोकारों के वैश्विक फलक पर रोशन सितारों की मानिंद सदैव के लिए अविस्मरणीय है।

इसके बाद कोरोना विभीषिका के रूप में सदी की सबसे भीषण त्रासदी के दौरान भी वर्चुअल प्लेटफार्म पर ऑनलाइन आयोजित विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक महोत्सव विश्व रंग 2020 की विश्व के 16 मुल्कों ने मेजबानी की। इसी रचनात्मक ऊर्जा के बल पर विश्व रंग 2021 का आयोजन कोरोना के बावजूद विश्व के 27 देशों में वर्चुअल प्लेटफार्म पर किया गया। इसमें 50 से अधिक देशों के हजारों रचनाकारों एवं लाखों–करोड़ों लोगों ने वर्चुअल प्लेटफार्म पर रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराकर विश्व रंग को कई गुना अधिक भव्यता के साथ अद्भुत, अकल्पनीय और अविस्मरणीय बना दिया।

कोरोना विभीषिका से उपजे भय निराशा एवं अवसाद से भरे इस कठिन समय के विरुद्ध आशा, विश्वास, प्रेम, करुणा और टैगोर के विश्व मानवता के सिद्धांत को आत्मसात करते हुए वैश्विक स्तर पर एक बड़े सांस्कृतिक, रचनात्मक हस्तक्षेप के रूप में विश्व रंग 2020 एवं विश्व रंग 2021 की संकल्पना की गई।

कोरोना काल से उपजे हालातों ने साफ संकेत दिए हैं कि हमें विकास का रास्ता बदलने की जरूरत है। इस दिशा में भारतीय कला, संस्कृति, साहित्य के रचनात्मक हस्तक्षेप के द्वारा हम उच्चतर शक्ति को जागृत कर सकते हैं। "विश्व रंग" अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव ने हिंदी के माध्यम से भारतीय कला, संस्कृति, साहित्य एवं संगीत के प्रसार और विस्तार के लिए एक स्वर्णिम फलक बुना है जिसमें गैर सरकारी संस्थाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उनमें से यहां पर "त्रिवेणी कला संगम" जयपुर का यहां पर उल्लेख किया जाना विषयानुकूल एवं प्रासंगिक रहेगा।

कैलाशचन्द्र **शर्मा** एक ऐसा व्यक्तित्व है जिन्होंने त्रिवेणी कला संगम, जयपुर के माध्यम से साहित्य–संगीत एवं नृत्य का प्रचार–प्रसार कर एक ऐसा पुण्य कार्य किया है, जिसके लिए आने वाली पीढियाँ तक उनकी ऋणी रहेंगी।

जयपुर जिले के ग्राम मैड़ में जन्मे **शर्मा** को साहित्य एवं संगीत के प्रारम्भिक संस्कार अपने पिता स्व. श्री गणेशदास जी से मिले जो स्वयं भजन आदि गाते भी थे तथा श्री सियावरजी के मन्दिर के महन्त के उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए उन्होंने विराटनगर अँचल के गॉवों में संगीत के प्रचार–प्रसार का ऐसा कार्य किया जिससे उनके दो पुत्र – बाबूलाल एवं कैलाश संस्कारित हुए। कैलाश अपने बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुद्धि, साहित्यानुरागी एवं रामलीला, नौटंकी एवं लोकनृत्यों के शौकीन रहे हैं। उनके पिताश्री श्री सियावरजी का मन्दिर,बाणगंगा, ग्राम मैड़ नामक स्थान पर प्रतिवर्ष एक मेले का आयोजन कराते थे जिसमें उनके शिष्य एवं भक्तगण दूर–दूर के गाँवों से आकर भगवान के दरबार में आयोजित सत्संगों में भाग लिया करते थे। इस अवसर पर बिसायतियों द्वारा महिलाओं एवं बच्चों की जरुरत की छोटी–मोटी वस्तुओं , सौंदर्य–प्रसाधनों आदि से सम्बन्धित वस्तुओं की दुकानें भी लगायी जाती थीं, जिनसे महिलाएँ टीकी–बिन्दी, चुटीला, पिनें, पहनने के छोटे–मोटे कपड़े आदि खरीदती तथा बच्चे लोग पपीहे (मुँह से बजाने की सीटी), बाँसुरी आदि खरीदकर मेले का आनन्द उठाया करते थे।

नौटंकी के बाद या रामलीला समाप्ति के पश्चात् नाटक मंडलियों द्वारा लोकनाटकों के प्रदर्शन भी किये जाते जिनमें, लोकनृत्यों की प्रधानता होती। उन दिनों नाच–गान के लिए कामां (भरतपुर) निवासी मनोहर–गिर्राज की मण्डली प्रसिद्ध मानी जाती थी और हर ब्याह शादी में इस मण्डली को बुलाया जाना प्रतिष्ठा का सूचक माना जाता था। महाभारतकालीन स्थान विराटनगर भी डॉ. **शर्मा** के जन्म स्थान ग्राम मैड़ से लगभग 8–9 किमी. की दूरी पर स्थित हैं जहाँ पर अर्जुन ने वृहन्नला के वेश में राजा विराट की पुत्री उत्तरा को संगीत एवं नृत्य की शिक्षा प्रदान की थी। उन दिनों के सांस्कृतिक परिवेश, विभिन्न अवसरों पर लोकनृत्यों एवं लोकनाटकों की प्रस्तुतियों तथा महाभारतकालीन अँचल में जन्म होने का यह संयुक्त प्रभाव ही था जिसके कारण डॉ. **शर्मा** का बाल्यकाल से ही संगीत, नृत्य, एवं नाट्य विधा के प्रति अनुराग उत्पन्न हुआ।" 2

त्रिवेणी कला संगम ने अपने साहित्य के प्रकाषन द्वारा लोकसाहित्य के प्रकटीकरण कर उसके प्रचार–प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संस्था के प्रयासों से देवनागर प्रकाषन जयपुर द्वारा " विरह का इन्द्रधनुष" उपन्यास प्रकाषित किया गया जिसमें लोकतत्त्वों को वृहद् रूप में देखा जा सकता है। वर्तमान समय में कला के क्षीण होते स्वरूप का उल्लेख इसमें राजस्थान के साहित्यकार श्री ओमप्रकाष **शर्मा** " निर्लेप" द्वारा किया गया है–

"28 दिसम्बर 2008 की रात्रि। सात बजे से नौ बजे तक का दृश्य। स्थान रामनिवास बाग, जयपुर के भव्य और विशाल रवीन्द्र मंच के मुख्य सभागृह का स्टेज। दर्शकों के नाम पर मात्र दो महिला, तीन पुरुष और एक नन्ही बालिका। इनमें से ही एक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और एक अध्यक्ष। इस बहुत बड़े थियेटर की शेष सभी सीटें खाली। जिस नाटक का मंचन चल रहा था वह था "मन चंगा तो कठौती में गंगा"। तीन कलाकार उसमें अभिनय कर रहे थे, एक युवती और दो पुरुष। नाटक मैड़–विराटनगर अँचल की संस्कृति एवं लोक जीवन पर आधारित था। महाभारतकालीन विराटनगर का भू–भाग ही मैड़ है। पार्श्व संगीत (प्लेष्बैक संगीत) की व्यवस्था थी। 6–7 गीतों का परिस्थितिजन्य समावेश। सभी ढूंढाड़ी में। जीवन्त अभिनय के साथ नाटक बहुत प्रभावशाली और रोचक था। कलाकार दर्शकों की संख्या से निराश न थे। वे इस प्रकार अभिनय कर रहे थे मानो पूरा हॉल दर्शकों से खचाखच भरा हो। इस नाटक के मुख्य पुरुष पात्र, लेखक, निर्देशक, व्यवस्थापक एक ही व्यक्ति थे। दस–बीस पुस्तकों, सैंकड़ों ढूंढाड़ी गीतों, कहानियों, उपन्यासों, जीवनी आदि विभिन्न विधाओं के लेखक हिन्दी साहित्य में पीएच.डी. तथा नाटकों पर डी.लिट्. किये हुए कैलाशचन्द्र **शर्मा** ही वह व्यक्ति थे जो इस नाटक का मंचन कर रहे थे। उन्होंने त्रिवेणी कला संगम, जयपुर की स्थापना की है। यह संस्था संगीत, नृत्य नाटक और लोक कलाओं के प्रचार–प्रसार, शिक्षा–दीक्षा आदि के लिये

कार्यरत है। कोई सरकारी या गैर सरकारी सहायता लिये बिना डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा इसका संचालन कर रहे हैं। संस्था का मुख्य उद्येश्य भारतीय संस्कृति, कला, संगीत आदि के मौलिक रूप को बनाये रखते हुए इनका प्रचार–प्रसार करना तथा पुरातन मूल्यों का प्रसार व संरक्षण करना है। उनकी पुस्तकें भी इसी दृष्टिकोण से लिखी हुई हैं। कैलाशचन्द्र शर्मा का यह पुनीत प्रयास स्तुत्य है।" 3

मैड़–विराटनगर अँचल में सारंगी पर गाये जाने वाली गोपीचन्द भर्तृहरी की जीवनियां, ढप की थाप पर धमाल, अलगोजा की धुन पर नाच, बधावा रतजगा, भिवाण, कार्तिक स्नान के पुराने गीत और लोकनृत्य आज लुप्त हो रहे हैं। धार्मिक सत्संगों में गाये जाने वाले पक्के (लोक) राग–मांड, सोरठ, बिहाग, कालिंगडा, आसावरी, मालकौंस, भैरवी, प्रभाती, अलीबक्शी ख्याल आदि सभी भुलाये जा चुके हैं। संत्संग और जगरातों में फिल्मी धुनों के भजनों ने सब कुछ समाप्त कर दिया है। एक प्रकार से लोक संस्कृति की सभी कलाएं और विधायें लुप्त हो चुकी हैं। ऐसे में डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के कार्यक्रम में दर्शकों की संख्या नाममात्र की होना कोई आश्चर्य नहीं कहा जा सकता। आश्चर्य तो यह था कि इस नाममात्र की दर्शकों की उपस्थिति में भी कलाकारों द्वारा अपना अभिनय मनोयोगपूर्वक किया गया।

"हिन्दू मान्यताओं के अनुसार महाप्रलय के समय महाराज मनु ने सृष्टि के बीजों को एक नाव में सुरक्षित रखा था और उसका प्रतिफल ही आज का सँसार है। डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा जैसे व्यक्ति भी ऐसा ही कर रहे हैं। बीज रूप में ग्रामीण संस्कृति की लोक कलाओं को सुरक्षित रख रहे हैं। किसी शुद्ध हृदयी सत्याचरण करने वाले व्यक्ति ने यदि वैश्वानर पर भगवान के भोग लगा दिया तो उसने समस्त ब्रह्माण्ड को भोजन करा दिया। कैलाश जी के आयोजन में प्रेक्षागृह की कुर्सियां खाली रही तो क्या हुआ? यदि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने सम्पूर्ण हृदय से उसकी सराहना कर दी, गद्गद् हो गये, आत्मविभोर होकर श्रद्धावनत् हो गये तो पूरा प्रेक्षागृह एक मायने में दर्शकों से खचाखच भरा होने से कम न रह गया। यदि वे पाँच दर्शक सचमुच में गद्गद थे तो पूरा हॉल गद्गद था। कला जीवन्त थी और जीवन्तता अमरता की निशानी होती है। " 4

वही साहित्य श्रेष्ठ माना जाता है जो समाज की घटनाओं के माध्यम से लोक–जीवन एवं लोकतत्त्वों को उजागर करे। इस मायने में कैलाष जी ने विरह का इन्द्रधनुष" की रचना कर एक नया कार्य किया है।

कैलाशचन्द्र शर्मा जी की कहानियां मानवीय मूल्य एवं संवेदना से ओतप्रोत हैं। इनके माध्यम से लेखक ने मानव जीवन के सभी पक्षों से पाठकों को साक्षात् कराया है। जिन मूल्यों की साहित्यकार जीवन सत्यों के रूप में अनुभूति कर ली जाती है वहीं मूल्य साहित्य में प्रतिबिम्बित होते हैं। इसके लिए साहित्यकार को मानवीय मूल्य एवं संवेदना को अविभाज्य बनाना पड़ता है। यही सब कैलाशचन्द्र शर्मा जी की कहानियों में प्राप्य है। इन्होंने अपनी कहानियों में मानवीय मूल्यों के साथ–साथ संवेदना का भी चित्रण किया है। यथार्थ के अन्तर्गत इन्होंने नारी शक्ति का सम्मान, पात्रों की सजीवता, जनसामान्य की तस्वीर, स्वार्थपरता, समाज में हो रही घटनाओं का चित्रण, निम्न एवं असहाय वर्ग से निकट का सम्पर्क आदि पक्षों का अंकन किया है। कैलाशचन्द्र शर्मा जी की कहानियां मानव–जीवन के विभिन्न का दस्तावेज है '' 5

उपन्यासकार जहां एक ओर नारी की आंतरिक दशा को व्यक्त करता है तो दूसरी ओर इसमें व्यक्ति का मानसिक एवं सामाजिक द्वन्द्व है , पर इन सबसे बढ़कर है लेखक का सामाजिक रूढ़ियों एवं बन्दिशों को बड़ी सच्चाई के साथ स्वीकार करना और उनसे जूझने के लिए व्यक्ति का मनोबल जुटाते हुए दिखाई देना ।

"हिन्दी साहित्य कैलाशचन्द्र शर्मा जी के कार्यों का फलक बहुत विस्तृत है। उन्होंने अपने सृजन को त्रिवेणी कला संगम जयपुर के मंच से विस्तारित किया है, अर्थात् इस संस्था के कार्यों की बात करना त्रिवेणी कला संगम जयपुर के कार्य माने जायेंगे। दूसरे षब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। कैलाष जी के साहित्य पर देष के विभिन्न विष्वविद्यालयों में अलग–अलग कोणों से दर्जनों षोधकार्य हो चुके हैं परन्तु इनके कथा साहित्य में "लोकतत्त्व" विषय पर अभी तक स्वतंत्र रूप से उस पर कोई शोध नहीं किया गया और न ही इस संस्था का परिचय देने वाले ग्रंथों में स्वतंत्र रूप से प्रकाश डालने वाले किसी ग्रंथ की रचना अभी तक हो पाई है। कैलाश चन्द्र शर्मा की गतिविधियों से वर्तमान पीढ़ी को एक नया जोश मिलता है, अपनी संस्कृति, इतिहास, लोकजीवन, लोककला एवं प्राचीन सामाजिक रीति रिवाजों को उजागर करने में उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप उनके कार्यों की

सार्थकता एवं पवित्रता के प्रति मस्तक स्वतः ही श्रद्धा से झुक जाता है। इनके सम्पूर्ण साहित्य में सहज–सरल भाषा के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को उकेरा गया है और वह भी संगीत एवं काव्य के द्वारा जिससे दर्शक एवं पाठक को पूरी बात समझ में आती है। इनके नाटक जहाँ एक ओर पाठकों एवं दर्शकों को आत्मसंतोष प्रदान करते हैं वही वर्तमान पीढ़ी को मार्गनिर्देशन, उन्हें अपने अतीत की जानकारी एवं भावी प्रगति हेतु ठोस आधार प्रदान करते हैं। कैलाश चन्द्र शर्मा और श्रीमती रेनूरानी शर्मा समग्र रूप से इस संस्था को पूर्ण समर्पण भाव से अपने कार्यों के द्वारा अपने आपको इस संस्था को अर्पित कर चुके हैं अतः अब उनके जीवन के व्यक्तिगत कार्यों और संस्थागत कार्यों में कोई अन्तर नही रह गया है और उनके ये कार्य यथार्थ रूप में किसी चमत्कार से कम नही हैं जिसे स्व. श्री बी.आर. चोपड़ा द्वारा निर्देशित महाभारत से गांधारी फेम हिन्दी फिल्म अभिनेत्री रेणुका इसरानी जी द्वारा सम्पादित जंगबहादुर पाण्डेय के शोधालेख के निम्न उद्धरण से जाना जा सकता है–

" उनकी रचना–यात्रा कई विधाओं से गुज़रती हुई एक समर्थ और जीवन्त रचनाकर्मी के बारे में आश्वस्त करती है। उपन्यास, कहानी, कविता, समीक्षा, शोध, डायरी, साक्षात्कार जैसी कई विधाओं का स्पर्श करती हुई डॉ. शर्मा की प्रतिभा ने नाटकों के क्षेत्र में सर्वाधिक विशिष्ट पहचान बनाई है। उन्होंने सृजन से लेकर मंचन तक, संयोजन से लेकर निर्देशन तक अपनी क्षमता का परिचय नाटक विधा के क्षेत्र में दिया है।"6

सृजन के संदर्भ में यह सच है कि परिवेश लेखन को प्रभावित करता है। इसलिए परिवेश के यथार्थ और उनके अनुभवों की अभिव्यक्ति लेखक अपनी दृष्टि से अपनी विधा में करता है। कैलाशचन्द्र शर्मा ने अपने सृजन की हर विधा में परिवेश के अनुभवों की ही ईमानदार अभिव्यक्ति की है। जन्मजात संस्कार की तरह उनकी प्रतिभा के बीज अँकुरित हुए हैं और समय के साथ उनकी उपलब्धियों का पौधा भी दिखने लगा है। इससे संकेत मिलता है कि प्रतिभा को प्रेरित होने भर की देर होती है, लेखक अपनी क्षमता का उपयोग करने में जुट जाता है। संस्था की स्थापना भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार, भारतीय साहित्य, संगीत, नाटक और अन्य कलाओं के विदेशों से आदान–प्रदान तथा प्रशिक्षण शिविरों एवं मंचीय प्रस्तुतीकरणों के माध्यम से इन विधाओं से लोगों को शिक्षित करने के उद्येश्य से की गई थी जिसमें वह पूर्णरूप से सफल रही है।

सांभरलेक निवासी चित्रकार स्व. श्री कन्हैयालाल वर्मा ने राजस्थानी लोक–षैली की चित्रकला को विष्व–स्तर पर सम्मान दिलवाया। उनसे कैलाष जी के गहरे सम्बन्ध रहे। वर्मा जी ने कैलाष जी की लोककलाओं के प्रति जो अभिरूचि थी उसे अभिव्यक्त किया और आगे चलकर बी .आर. चोपडा साहब की महाभारत में गान्धारी फेम अभिनेत्री रेणुका इसरानी जी ने "कर्मपथ–कैलाशचन्द्र शर्मा का बहुआयामी सृजन" में वर्मा जी के इन विचारों को एक षोध–आलेख के रूप में इस प्रकार स्थान दिया– ष

" दूसरे दिन निर्धारित समय पर डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा मेरे घर पर आये। हम लोग अल्पाहार के साथ–साथ साहित्य एवं कला चर्चा में लग गए। उन दिनों मैं "मेघदूत कला श्रृंखला" पर कार्य कर रहा था। प्रत्येक चित्र को शर्मा जी बड़े ध्यान से देख रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि–

• अलकापुरी में जयपुर का स्थापत्य एवं रंग विधान क्योंकर दर्शाया गया है।

मेरा उत्तर था कि अलकापुरी को महाकवि कालिदास ने स्वर्ग का टुकड़ा कहा है और मैं जयपुर को सौन्दर्य की दृष्टि से उत्कृष्ट मानता हूं। इसीलिए चित्रण के स्थापत्य में इसका प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टिगत हो रहा है। फिर तो आपने मेरी चित्रण प्रक्रिया पर अनेक प्रश्न किए, यथा–

- रंग किस प्रकार बनाते हैं?
- कागज कौनसा काम में लेते हैं?
- संयोजन की उत्कृष्टता किस बात पर निर्भर करती है?
- नख–शिख चित्रण कल्पना पर आधारित है या यथार्थ पर?
- नारी–चित्रण में शील की अभिव्यक्ति बहुत सुन्दर बन पड़ी है, कैसे?
- महाकाल के दर्शन करके सम्बन्धित चित्र सृजित किया अथवा पूर्व में ही चित्रण कर चुके थे?
- दशपुर– वधुओं के सौन्दर्य का आधार कहाँ से प्राप्त किया?

आदि अनेक प्रश्न शर्मा जी मुझसे पूछते जाते और मैं उनका समाधान करता। " 7

संदर्भ

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य की मूल्य चेतना, पृष्ठ संख्या 14
2 कर्मपथ संपादक रेणुका इसरानी, पृष्ठ संख्या 21–22
3 कर्मपथ संपादक रेणुका इसरानी, पृष्ठ संख्या 27–28
4 कैलाषचन्द्र **शर्मा** का साहित्य सृजन, पृष्ठ संख्या 59
5 कैलाषचन्द्र**शर्मा** जी की कहानियों में मानवीय मूल्य एवं संवेदना, रीना कुमारी द्वारा सम्पादित " कैलाषचन्द्र **शर्मा** का बहुआयामी सृजन, पृष्ठ संख्या 67"
6 कर्मपथ संपादक रेणुका इसरानी, पृष्ठ संख्या 21–22
7 कर्मपथ संपादक रेणुका इसरानी, पृष्ठ संख्या 192

❑❑❑